उन्होंने अपने भूगोल के चिंतन में पूर्व विज्ञानों का विश्लेषण किया। वे डार्विन से प्रभावित होकर भौतिक परिवेष इनके तत्व, मानव पर उसका प्रभाव विश्व के सामने रखा और पहली बार 'Anthropography' शब्द का प्रयोग किया। दूसरे खण्ड में सांस्कृति, वातावरण, जनसंख्या प्रसार एवं प्रवास का वर्णन किया। भौतिक भूगोल का शोध करके कई शोध प्रकाशित किया।

ब्रुन्स ने लिखा है कि रेटजेल को पार्श्विक सभ्यता का विशेष ज्ञान था। मनुष्य एवं उसके तत्वों को भूगोल शास्त्री के नजर से देखता था। वे रिटर से बहुत प्रभावित हुए और उनकी 'अर्डकुण्डे' को गतिशील एवं विकसित करना चाहते थे, लेकिन दोनों के विचार में काफी भिन्नता है।

(i) रिटर ने भौगोलिक वर्णन प्रादेशिक विधि से जबकि रेटजेल क्रमबद्ध विधि से किया।
(ii) रेटजेल ने भौगोलिक वर्णन ईश्वरीय शक्ति के माध्यम से किया जबकि डार्विन ने विकासवादी सिद्धान्त की प्रधानता दी।
(iii) रेटजेल यह मानते थे कि प्राकृतिक विकास के लिये मानव है। विभिन्न जीव अपने भौतिक वातावरण अपने क्षमता के अनुसार समायोजन करता है। इनके अनुसार हमारे कार्यकला चार प्रमुख समूह नियंत्रित करते हैं:-
   (a) शारीरिक प्रजाति लक्षण के प्रभाव
   (b) मनोवैज्ञानिक प्रभाव
   (c) जनसमूह की आर्थिक एवं सामाजिक गतिशीलता
   (d) मानव के गतिशीलता को प्रभावित करने वाले साधन

इन चारों साधनो एवं मानव प्राकृति में अन्तर सम्बंध स्थापित करने के लिये रेटजेल ने किया। रेटजेल मानव विकास को तीन जिम्मेदार ठहरा या:-
   (a) Large situation (परिस्थिति)
   (b) Roug space (क्षेत्र)
   (c) Rolam Lino-mit (सिमायें)

उपसंहार

मानव भूगोल एवं उसकी शाखाओं जैसे राजनीतिक, सांस्कृतिक, राज्यों का भौगोलिक, जैविक सिद्धान्त, सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि, क्षेत्रों का सूक्ष्म अध्ययन आदि के प्रारम्भिक विकास में उसका महत्तम योगदान रहा। इस दृष्टि से वह सबसे महत्वपूर्ण अकेला अग्रणी विद्वान माने जा सकते हैं। इन्हे मानव 'भूगोल का जन्मदाता' माना गया है। अतः रेटजेल के कार्यों को भूरि-भूरि प्रसंसा करते हुए **ब्रुस ने कहा** कि रेटजेल जर्मनी के भूगोल के विकास में नवीन विचारों के जनक के रूप में विख्यात हुए। इसकी महता इसी में है कि इनके भूगोल विज्ञान का विधि तंत्र विकासित करने के साथ उसमें नये विचारों का भी प्रतिपादन किया। **डिकिन्सन के अनुसार** "इसमें कोई शंका नहीं कि रेटजेल मानव भूगोल के विकास हेतु एक मात्र विद्वान हुआ।"

भूगोल में फ्राइडरिच रेटजेल (FRIEDRICH RATZEL) का योगदान।

रेटजेल का जन्म जर्मनी के कार्लश्रू नगर में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इसी नगर में हुआ था। इसके बाद रेटजेल हाइडेलबर्ग, बर्लिन एवं म्यूनिख विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। यह वे प्राणी विज्ञान व भू-विज्ञान का गहराई से अध्ययन किया। भौगोलिक परिवेश में रेटजेल मानव को महत्वपूर्ण स्थान दिया है इस लिये रेटजेल को 'मानव भूगोल' का जन्मदाता कहे जाते हैं। रेटजेल ने भी हम्बोल्ट की तरह काफी भ्रमण किया और प्राकृति से उसके तत्वों से सम्पर्क कर मनुष्य से उसका सम्बंध स्थापित किया। सन् 1874 से 75 में पूर्वी यूरोप, इटली, उत्तरी अमेरिका गये और वहा के स्थल मानव समस्याओं से प्रभावित हुऐ। रेटजेल ने सन 1876 में कैलिफोर्निया में 'चीनियों के प्रवास' और 1880 में संयुक्त राज्य अमेरिका पर 'भौतिक' एवं सांस्कृतिक भूगोल लिखा। 1886 में लिपजिग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्ति हुई। इनका निधन वर्ष 1904 में हो गया।

रेटजेल की रचनाएँ:→ इनकी निम्नलिखित रचनाए हैं जैसे:-

(i) डार्विन के विकास वादी सिद्धान्त की व्यवस्थित समालोचना (1869)
(ii) Travels of a Naturalist (मध्य यूरोप की यात्रा के समय लिखे गये लेखो का समूह)
(iii) भूमध्यसागरीय तट के जीव (1870 के युद्ध के बाद)
(iv) चीनीयों के प्रवास (अमेरिका से लौटने पर)
(v) उत्तरी अमेरिका का भौतिक एवं सांस्कृतिक भूगोल (1876-1880)
(vi) उत्तरी अमेरिका का राजनीतिक भूगोल (1893)
(vii) 'Volker Kunde' तीन खण्डों में।
(viii) Anthrogeographie तीन खण्डों में।
(ix) vergleichende Erdkunde (1901-1902)
(x) राजनीतिक भूगोल दो खण्डों में (1897-1903)
(xi) 'डयूशलैंड' स्कूली छात्रों के लिये 1898 में लिखी गई।
(xii) 'Klaine schriften' मृत्यु के पश्चात प्रकाशित हुआ (1906 में) आदि।

विचार धारा:— रेटजेल जीवविज्ञान, भू-विज्ञान और मौसम विज्ञान के विद्वान थे। हम्बोल्ट की तरह वे भी भूगोल के ज्ञाता बन गये। रेटजेल ने मानव और वातावरण का विश्लेषण किया। उन्हें 'वातावरण निश्चयवाद' का जन्मदाता कहा जाता है।